१६ सादासादाणुयोगद्दारं

अजियं जियसयलविभुं परमं जय-जीयबंधवं णमिउं ।
सादासादणुयोगं समासदो वण्णइस्सामो ।। १ ।।

सादासादे त्ति अणुयोगद्दारस्स पंच अणुयोगद्दाराणि । तं जहा– समुक्कित्तणा अट्ठपदं पदमीमांसा सामित्तं अप्पाबहुअं चेदि। समुक्कित्तणा त्ति जं पदं तस्स विहासा। तं जहा– एयंतसादं अणेयंतसादं एयंतअसादं अणेयंतअसादं च अत्थि । समुक्कित्तणा गदा ।

अट्ठपदं । तं जहा– जं कम्मं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिच्छुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमेयंतसादं । तव्वदिरित्तं अणेयंतसादं । जं कम्मं असादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिच्छुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमेयंतअसादं । तव्वदिरित्तमणे-यंतअसादं । एवं अट्ठपदं गदं ।

पदमीमांसा । तं जहा– एयंतसादमत्थि उक्कस्सयमणुक्कस्सयं जहण्णमजहण्णयं च । एवं सेसाणं पि वत्तव्वं । पदमीमांसा✡ गदा ।

जिन्होंने समस्त विभुओंपर विजय प्राप्त कर ली है और जो जगत्के जीवोंकी हितैषी हैं उन उत्कृष्ट अजित जिनेन्द्रको नमस्कार करके संक्षेपमें सातासातअनुयोगद्वारका वर्णन करते हैं ।। १ ।।

'सातासात' इस अनुयोगद्वारके पांच अवान्तर अनुयोगद्वार हैं । यथा– समुत्कीर्तना, अर्थपद, पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व । समुत्कीर्तना यह जो पद है उसकी विभाषा बतलाते हैं । यथा– एकान्तसात, अनेकान्तसात, एकान्तअसात और अनेकान्तअसात है । समुत्कीर्तना समाप्त हुई ।

अर्थपदका कथन इस प्रकार है– सातास्वरूपसे बांधा गया जो कर्म संक्षेप व प्रतिक्षे-पसे रहित होकर सातास्वरूपसे वेदा जाता है उसका नाम एकान्तसात है । इससे विपरीत अनेकान्तसात है । जो कर्म असातारूपसे बांधा जाकर संक्षेप व प्रतिक्षेपसे रहित होकर असा-तास्वरूपसे वेदा जाता है उसका नाम एकान्तअसात है । इससे विपरीत अनेकान्तअसात कहा जाता है । इस प्रकार अर्थपद समाप्त हुआ ।

पदमीमांसाका कथन इस प्रकार है– एकान्तसात उत्कृष्ट है, अनुत्कृष्ट है, जघन्य ह और अजघन्य भी है । इसी प्रकार शेष अनेकान्तसात आदिके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये । इस प्रकार पदमीमांसा समाप्त हुई ।

✡ ताप्रतौ 'एवं मीमांसा' इति पाठः ।

सामित्तं । तं जहा– उक्कस्समयमेयंतसादं कस्स होदि ? अभवसिद्धियपाओग्गे पयदं।जो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो गुणिदकम्मंसियो तत्तो उव्वट्टिदो※ संतो सव्वलहुं एक्कत्तीसंसागरोवमट्ठिदियं देवलोगं गच्छिहिदि । किं कारणं ? तस्स सादवेदयद्धाओ सव्वमहंतीयो बहुआओ च भविस्संति । तदो जो एवं देवलोगे भविस्सो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो तस्स चरिमसमयणेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतसादं। अणेयंतसादमुक्कस्सयं कस्स ? जो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो डादरपुढविकाइएसु तसकाइएसु च कम्मं गुणेदूण आगदो, तस्स पुण जो अधापवत्तसंकमेण असंकमस्स अवहारकालो तत्तियमेत्त जीविदव्वस्स सेसं, सो च तं जीविदव्वसेसं सव्वमसादो भविस्सदि, तस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागसेसाउअस्स णेरइयस्स उक्कस्सयमणेयंतसादं । उक्कस्सयमेयंत-असादं* कस्स ? जारिसस्स⊗ णेरइयस्स उक्कस्सयमणेयंतं सादं कदं तारिसस्सेव णेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतअसादं । णवरि णाणत्तं बादरकाइएसु☼ अच्छिदो वा ण वा । उक्कस्सयमणेयंतअसादं कस्स ? जस्स उक्कस्सयमेयंतअसादं तस्सेव उक्कस्सय-मणेयंतअसादं । णवरि बादरकाइएसु तसकाइएसु च कम्मं गुणेदूण णिरयगइं पवेसेदव्वो । तस्स देवलोगभाविस्स चरिमसमयणेरइयस्स उक्कस्सयमणेयंतं असादं ।

स्वामित्वका कथन किया जाता है । यथा– उत्कृष्ट एकान्तसात किसके होता है ? यहां अभव्यसिद्धिकप्रायोग्य प्रकृत है । जो सातवीं पृथिवीका नारकी गुणितकर्मांशिक वहांसे निकल कर सर्वलघु कालमें इकतीस सागरोपम आयुस्थितिवाले देवलोकको प्राप्त होगा उसके होता है ।

शंका– इसका कारण क्या है ?

समाधान– इसका कारण यह है कि उसके सातावेदककाल सबसे महान् और बहुत होंगे।

इसलिये जो आगे देवलोकमें जन्म लेगा ऐसा जो सातवीं पृथिवीका नारकी है उस अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट एकान्तसात होता है । उत्कृष्ट अनेकान्तसात किसके होता है ? जो सातवीं पृथिवीका नारकी बादर पृथिवीकायिकों और त्रसकायिकोंमें कर्मको गुणित करके (गुणितकर्मांशिक होकर) आया है, उसका जो अध:प्रवृत्तसंक्रमसे असंक्रमका अवहारकाल है उतना मात्र जीवन शेष है, वह उस शेष सब जीवन पर्यंत सातासे रहित होगा, उस पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र शेष आयुवाले नारकीके उत्कृष्ट अनेकान्तसात होता है । उत्कृष्ट एकान्त-असात किसके होता है ? जिस प्रकारके नारकीके उत्कृष्ट अनेकान्तसात किया गया है उसी प्रकारके ही नारकीके उत्कृष्ट एकान्तअसात होता है । विशेष इतना है वह बादरकायिकोंमें रह भी सकता और नहीं भी । उत्कृष्ट अनेकान्तअसात किसके होता है? जिसके उत्कृष्ट एकान्तअसात होता है उसीके उत्कृष्ट अनेकान्तअसात होता है । विशेष इतना है कि बादरकायिकोंमें और त्रसकायिकोंमें कर्मको गुणित करके उसे नरकगतिमें प्रविष्ट कराना चाहिये । देवलोकमें उत्पन्न होनेवाले उसी अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट अनेकान्तअसात होता है ।

※ प्रतिषु ' उवट्ठिदो ' इति पाठः । * अ-काप्रत्योः ' मेयंतसादं ' इति पाठः । ⊗ अप्रतौ ' जाविसस्स ', ताप्रतौ ' जावि (रि) सस्स ' इति पाठः । ☼ अ-काप्रत्योः ' णाणत्तबादरं ' इति पाठः ।

जहण्णयमेयंतं सादं* कस्स ? जो पढमसमयो णेरइयो सव्वजहण्णएण जोगेण सादं बंधदि, जत्तियमेत्तो अधापवत्तसंकमेण असंकमस्स अवहारकालो उक्कस्सओ तत्तो समऊणं कालं♣ असादो होहिदि त्ति तदो जं तस्स तइया पढमसमयसादस्स अधाट्ठिदिय❋मुदयमेहिदि तप्पढमसमयणेरइयस्स जहिण्णय ? मेय ? तसादं । जहण्णयमणेयंतसादं कस्स ? जो सुहुमसंतकम्मेण जहण्णएण तसेसु उववण्णो, तत्थ पढमसमयतब्भवत्थमादिं कादूण सव्वचिरमसादं बंधिदूण तस्स चरिमसमयअसादबंधयस्स जहण्णयमणेयंतसादं । सो च पुण तं चरिमसमयअसादबंधमादिं कादूण सव्वरहस्सेण कालेण एक्कतीसंसागरोवमाउट्ठिदिदेवगदिं गाहिदि । तत्थ सव्वमहंतीओ सव्वबहुगीओ च सादवेदगद्धाओ भविस्संति । जहण्णयं एयंतं असादं कस्स ? जस्स जहण्णयं अणेयंतसादं तस्स चेव जहण्णयमेयंतअसादं भाणिदव्वं । णवरि असादेण जहण्णएण तसेसु उववण्णो, तत्थ च सादबंधयद्धमुक्कस्सयं बंधिदूण चरिमसमयसादबंधगो जादो, तस्स जहण्णयमेयंतअसादं । जहण्णयमणेयंतमसादं कस्स ? एदस्स चेव, सुहुमेहि जहण्णएण असादकम्मेण आगदो तमेसु उववण्णो, उक्कस्सयं सादबंधयद्धं बंधिदूण जो चरिमसमयसादबंधओ जादो, तस्स जहण्णयमणेयंतअसादं । सो च पुण सव्वलहुं णिरयं गाहिदि, तत्थ पलिदोवमपुधत्तं वा चिरयरयं✿ वा असादो होहिदि, तदो तारिसस्स

जघन्य एकान्तसात किसके होता है ? जो प्रथम समयवर्ती नारकी सर्वजघन्य योगसे साताको बांधता है, जितना मात्र अधःप्रवृत्तसंक्रमसे असंक्रमका उत्कृष्ट अवहारकाल है उससे एक समय कम काल साता रहित होगा, इसलिये उस प्रथम समयवर्ती सातके उस समय जो अधःस्थिति उदयप्राप्त होगी उस प्रथम समयवर्ती नारकीके जघन्य एकान्तसात होता है । जघन्य अनेकान्तसात किसके होता है ? जो जघन्य सूक्ष्म सत्कर्मके साथ त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थको आदि करके सर्वचिर काल असाताको बांधता है उस अन्तिम समयवर्ती असातबन्धकके जघन्य अनेकान्तसात होता है । वह भी उस अन्तिम समय रूप असातबन्धको आदि करके सर्वलघु कालमें इकतीस सागरोपम आयुस्थितियुक्त देवगतिको प्राप्त होगा । वहां सबसे महान् और सबसे अधिक सातवेदककाल होंगे । जघन्य एकान्तअसात किसके होता है ? जिसके जघन्य अनेकान्तसात होता है उसीके जघन्य एकान्त-असात कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जघन्य असातके साथ त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है और वहां उत्कृष्ट सातबन्धककाल तक उत्कृष्ट बन्ध करके अन्तिम समयवर्ती सातबन्धक हुआ है उसके जघन्य एकान्तअसात होता है । जघन्य अनेकान्तअसात किसके होता है ? वह इसीके होता है– सूक्ष्म योग्य जघन्य असातकर्मके साथ आकर, त्रसोंमें उत्पन्न होकर व उत्कृष्ट सातबन्धक-काल तक बन्ध करके जो अन्तिम समयवर्ती सातबन्धक हुआ है उसके जघन्य अनेकान्तअसात होता है । वह सर्वलघु कालमें नारक भवको प्राप्त करेगा, वहां पल्योपमपृथक्त्व काल अथवा चिरतर काल तक साता रहित होगा, इसलिये उक्त प्रकारके जीवके उस प्रथम सातबन्धक कालके

---

* ताप्रतौ 'मेयंतसादं' इति पाठः । ♣ ताप्रतौ 'समऊणकालं' इति पाठः । ❋ अ-काप्रत्योः 'अधाविदिय–' इति पाठः । ? अ-काप्रत्योः 'जहण्णिया' इति पाठः । ✿ ताप्रतौ 'विरयरयं' इति पाठः ।

तस्से पढमसादबंधगद्धाए चरिमसमए जहण्णयमणेयंतअसादं । एवं अभवसिद्धिय-पाओग्गे सामित्तं गदं ।

भवसिद्धियपाओग्गे एयंतसादमुक्कस्सयं कस्स? जो सत्तमादो पुढवीदो सव्वलहु मणुसगइमागदो, सव्वलहुं खवणाए अब्भुट्ठिदो, चरिमसमयभवसिद्धियो वि संतो सादवेदगो होहिदि, तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स उक्कस्सयमेयंतसादं । उक्कस्सयमेयंतमसादं कस्स? एरिसग्रस्सेव चरिमभवमणुस्सस्स चरिमे असादबंधे च चरिमसमयअसादबंधयस्स । सो च पुण चरिमसमयभवसिद्धियट्ठाणे असादवेदओ होदि । उक्कस्सयमणेयंतं सादं कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स सादवेदयस्स । उक्कस्सयमणेयंतं असादं कस्स? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स असादवेदयस्स । जहण्णियाणि▣ सामित्ताणि जहा अभवसिद्धियस्स तारिसाणि चेव । एवं सामित्तं गदं ।

पदेसग्गस्स✽ पमाणाणुगमो– अभवसिद्धियस्स उक्कस्सं पि एयंतसादं एयंत-असादं वा समयपबद्धस्स असंखेज्जपलिदोवमवग्गमूलभागो । भवसिद्धियस्स उक्कस्स-यमेयंतसादं एयंतअसादं✡ च समयपबद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता, जवमज्झसमयपबद्धा च अवहारकालमेत्ता । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

अन्तिम समयमें जघन्य अनेकान्तअसात होता है । इस प्रकार अभव्यसिद्धिक प्रायोग्यके आश्रयसे स्वामित्वका कथन समाप्त हुआ ।

भव्यसिद्धिकप्रायोग्यके आश्रयसे उत्कृष्ट एकान्तसात किसके होता है? जो सातवीं पृथिवीसे सर्वलघु कालमें मनुष्यगतिमें आकर और सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होकर अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक भी होता हुआ सातवेदक होगा उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्पराயिकके उत्कृष्ट एकान्तसात होता है । उत्कृष्ट एकान्तअसात किसके होता है? वह ऐसे ही अन्तिम भववाले (चरमशरीरी) मनुष्यके अन्तिम असातबन्धमें अन्तिम समयवर्ती असात-बन्धक होनेपर होता है । वह भी अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक स्थानमें असातवेदक होता है । उत्कृष्ट अनेकान्तसात किसके होता है? वह सातवेदक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । उत्कृष्ट अनेकान्तसात किसके होता है ? वह गुणितकर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक असातवेदकके होता है । जघन्य स्वामित्व जैसे अभव्यसिद्धिकके कहे गये हैं वैसे ही भव्यसिद्धिके भी हैं । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशाग्रके प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा की जाती है – अभव्यसिद्धिकका उत्कृष्ट एकान्त-सात और एकान्तअसात समयप्रबद्धके असंख्यात पल्योपम वर्गमूल प्रमाण है । भव्यसिद्धिकके उत्कृष्ट एकान्तसात और एकान्तअसात समयप्रबद्ध अन्तर्मुहूर्त मात्र हैं । यवमध्यसमयप्रबद्ध अवहारकाल मात्र हैं । प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

▣ ताप्रतौ 'जहण्णयावि (णि)' इति पाठः । ✽ ताप्रतौ 'पदेसस्स' इति पाठः । ✡ ताप्रतौ 'एयंत असादं' इति पाठः ।

एत्तो अभवसिद्धियपाओग्गे अप्पाबहुअं कायव्वं । तं जहा- सव्वत्थोवमुक्कस्स- यमेयत्तं सादं । एयंतं असादं असंखेज्जगुणं (अणेयंतं सादं असंखेज्जगुणं) अणेयंत असादं असंखे० गुणं ।

णिरयगईए तिरिक्खेसु तिरिक्खणीसु मणुस्सेसु मणुस्सिणीसु देवेसु देवीसु च एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिएसु उक्कस्सअप्पाबहुअस्स ओघभंगो ।

सव्वत्थोवं जहण्णयमेयंतसादं । एयंतअसादमसंखेज्जगुणं । अणेयंतसादं असंखे० गुणं । अणेयंतअसादं संखे० गुणं । सव्वासु गदीसु सव्वेसु एइंदिएसु☼ ओघभंगो । एवमभवसिद्धियपाओग्गे अप्पाबहुअं समत्तं ।

भवसिद्धियपाओग्गे उक्कस्सए अप्पाबहुअं । तं जहा- सव्वत्थोवमुक्कस्सयं एयंतसादं । एयंतअसादं संखेज्जगुणं । अणेयंतअसादं असंखे० गुणं । अणेयंतसादं विसेसाहियं ।

णिरयगईए उक्कस्सयमेयंतसादं थोवं । एयंतअसादं संखेज्जगुणं । अणेयंत- सादमसंखे० गुणं । अणेयंतअसादं (अ)संखे० गुणं । मणुसगइवज्जासु❋ सव्वासु गदीसु एइंदिएसु च णिरयगइभंगो । मणुस्सेसु मणुसिणीसु ओघभंगो । जहाअभवसिद्धिय- पाओग्गे जहण्णयं तहा✿ भवसिद्धियपाओग्गे वि जहण्णयं कायव्वं ।

यहां अभव्यसिद्धिकप्रायोग्यके आश्रयसे अल्पबहुत्व करते हैं । यथा- उत्कृष्ट एकान्त- सात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात उससे असंख्यातगुणा है । अनेकान्त सात असंख्यातगुणा है । अनेकान्त असात असंख्यातगुणा है ।

नरकगतिमें, तिर्यंचोंमें, तिर्यंचनियोंमें, मनुष्योंमें, मनुष्यनियोंमें, देवोंमें, देवियोंमें, तथा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जीवोंमें उत्कृष्ट अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है ।

जघन्य एकान्तसात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात उससे असंख्यातगुणा है । अनेकान्तसात असंख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात संख्यातगुणा है ।

सब गतियों और सब एकेन्द्रियोंमें जघन्य अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है । इस प्रकार अभव्यसिद्धिक प्रायोग्यके आश्रित अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

भव्यसिद्धिकप्रायोग्यके आश्रयसे अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है- उत्कृष्ट एकान्तसात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात संख्यातगुणा है । अनेकांतअसात असंख्यातगुणा है । अनेकान्तसात विशेष अधिक है ।

नरकगतिमें उत्कृष्ट एकान्तसात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात संख्यातगुणा है । अनेकान्तसात असंख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिको छोडकर शेष सब गतियोंमें और एकेन्द्रियोंमें नरकगतिके समान प्ररूपणा है । मनुष्यों और मनुष्यनि- योंमें ओघके समान प्ररूपणा है । जघन्य अल्पबहुत्व जैसे अभव्यसिद्धिकप्रायोग्यके विषयमें किया गया है वैसे ही भव्यसिद्धिक प्रायोग्यके विषयमें भी करना चाहिये ।

☼ ताप्रतौ ' सव्वेसु इंदिएसु ' इति पाठः । ❋ अ-काप्रत्योः ' मणुसगईए ' इति पाठः ।
✿ अप्रतौ ' तम्हा ' इति पाठः ।

एत्तो अट्ठहि पदेहि अप्पाबहुअं कायव्वं । तं जहा-- सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं जं सादत्ताए वेदिज्जदि तं थोवं । जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडि-संछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । विसेसो पुण संखे० भागो । जमसाद-त्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादात्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं ।

अविपच्चिदासु✲ सव्वासु गदीसु एइंदिएसु च ओघभंगो । अध विपच्चिदे♠ कधं भवदि? णिरयगदीए समुट्ठिदं जं णिरयगदीए चेव विपच्चदि♣ एदं विपच्चिदं⊡ णाम । एदेण अट्ठपदेण विअंचिदस्स अप्पाबहुअं वुच्चदे । तं जहा--णिरयगईए ताव जं

यहां आठ पदोंके द्वारा अल्पबहुत्व करते हैं । वह इस प्रकार है- (१) सातस्वरूपसे बांधा गया जो असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोक है । (२ जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण उसका संख्यातवां भाग है । ३) जो असात-स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । (५) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । (६) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । (७) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (८) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है ।

अविपच्चित अर्थात् विपाक रहित सब गतियों और एकेन्द्रियोंमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है ।

शंका-- विपच्चितमें अल्पबहुत्व किस प्रकार है ?

समाधान-- नरकगतिमें उत्पन्न हुआ जो नरकगतिमें ही विपाकको प्राप्त होता है उसका नाम विपच्चित है । इस अर्थपदके अनुसार विपच्चितका अल्पबहुत्व कहते हैं । वह इस प्रकार है-

(१) नरकगतिमें जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ

✲ अ-काप्रत्योः ' अधियंचिदासु ', ताप्रतौ ' अधियंचिदासु (अवि गच्चिदासु ' इति पाठः ।

♠ अ-काप्रत्योः ' विअंचिदे ', ताप्रतौ ' वियं (पच्चि) चिदे ' इति पाठः ।

♣ काप्रतौ ' विपंचदि ' इति पाठः । ⊡ प्रतिषु ' विपंचिदं ' इति पाठः ।

सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं सव्वत्थोवं। जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखे० गुणं०। जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं। जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धमपडिसंछुद्धमसादत्ताए वेदिज्जदि तं संखे० गुणं०। जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखे० गुणं०। जं असादत्ताए✿ बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए✱ वेदिज्जदि तमसंखे० गुणं। जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धमसादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। जं♠ सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखे० गुणं। एवं णिरयगईए परूवणा गदा।

एत्तो मणुसगदीए विपच्चिदेण⊗ अप्पाबहु असाहणत्थं एसा❁ परूवणा कीरदे। तं जहा– मणुसगईए असादवेदयद्धा✳ थोवा। सादबंधगद्धा संखेज्जगुणा। असादबंधगद्धा संखेज्जगुणा। सादवेदगद्धा♣ संखेज्जगुणा। जहा मणुसगईए तहा णिरयगईए वज्जाणं▣ सव्वेसिं तसाणं। एइंदिएसु सादबंधगद्धा सादवेदगद्धा च दो वि तुल्लाओ थोवाओ। असादवेदगद्धा असादबंधगद्धा च दो वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ।

सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह सबसे स्तोक है। (२) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (३) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है। (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (५) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (६) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है। (७) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (८) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है। इस प्रकार नरकगतिमें प्रकृत प्ररूपणा समाप्त हुई।

यहां मनुष्यगतिमें विपच्चित स्वरूपसे अल्पबहुत्वको सिद्ध करनेके लिये यह प्ररूपणा की जाती है। यथा– मनुष्यगतिमें असातवेदककाल स्तोक है। सातबंधककाल संख्यातगुणा है। असातबन्धककाल संख्यातगुणा है। सातवेदककाल संख्यातगुणा है। जिस प्रकार मनुष्यगतिमें यह क्रम है उसी प्रकार नरकगतिको छोड़कर शेष सब त्रसोंके भी यही क्रम समझना चाहिये। एकेन्द्रियोंमें सातबन्धककाल और सातवेदककाल दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं। असात–वेदककाल और असातबन्धककाल दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं।

✿ अ-काप्रत्योः 'सादत्ताए', ताप्रतौ '(अ) सादत्ताए' इति पाठः। ✱ ताप्रतौ '(अ) सादत्ताए', मप्रतौ 'सादत्ताए' इति पाठः। ♠ अ-काप्रत्योर्नोपलभ्यते वाक्यमेतत्। ⊗ अप्रतौ 'अंचिदेण', का-ताप्रत्योः 'विअंचिदेण' इति पाठः। ❁ ताप्रतौ 'अप्पाबहुअं साहणत्थमेसा' इति पाठः। ✳ अप्रतौ 'असादबंधगद्धा' इति पाठः। ♣ अप्रतौ 'सादबंधगद्धा' इति पाठः। ▣ ताप्रतौ 'णिरयगइवज्जाणं' इति पाठः।

एदेण अट्ठपदेण मणुसगईए ताव अप्पाबहुअं। तं जहा– सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए जं✱ वेदिज्जदि तं थोवं। जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। असादत्ताए जं बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। सादत्ताए जं बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं। जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं।

जहा मणुस्सेसु तहा मणुसिणीसु पंचिंदियतिरिक्खेसु तिरिक्खिणीसु देवेसु देवीसु च कायव्वं। एइंदिएसु विपच्चिदेण♣– जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं थोवं। जं▣ सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं। असादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं जं सादत्ताए वेदिज्जदि (तं) तत्तियं चेव। जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए

इस अर्थपदके अनुसार मनुष्यगतिमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है। यथा– (१) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोक है। (२) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (३) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (५) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है। (६) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (७) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (८) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है।

जिस प्रकार मनुष्योंमें अल्पबहुत्व किया गया है उसी प्रकार मनुष्यनियों, पंचेन्द्रिय तिर्यंचों, तिर्यंचनियों, देवों और देवियोंमें भी करना चाहिये। एकेन्द्रियोंमें विपच्चितस्वरूपसे उक्त अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है– (१) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोक है। (२) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (३) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह उतना ही है। (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त

✱ ताप्रतौ 'जं' इत्येतत्पदं नास्ति। ♣ प्रतिषु 'विअंचिदेण' इति पाठः। ▣ अप्रतौ 'जा' इति पाठः

वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं तत्तियं चेव । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं ।

बेइंदिएसु विपच्चिदेण✽ । तं जहा– जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं थोवं । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए बद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जहा बीइंदिएसु तहा तीइंदिएसु चउरिंदिएसु च । एवं♣ सादासादे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (५) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । (६) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (७) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह उतना मात्र ही है। (८) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है ।

द्वीन्द्रियोंमें विपच्चितस्वरूपसे अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा इस प्रकार है– (१) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोक है । (२) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (३) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (५) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है। (६) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (७) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। (८) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है। जिस प्रकार द्वीन्द्रियोंमें यह प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार त्रीन्द्रियों और चतुरिन्द्रियोंमें भी समझना चाहिये । इस प्रकार सातासात यह अनुगोगद्वार समाप्त हुआ ।

✽ प्रतिषु 'विअंचिदेण' इति पाठः । ♣ का-ताप्रतोः 'तीइंदिय-चउरिंदिएसु एवं' इति पाठः ।